

53105



६०। सोलैषा ५६ सदर बाजा ॥ बावनव तेकं गुरा ॥ तीन सैसाठ ज्याकै चारालागा ॥ कोटवरापच ३
 फेरा ॥ १। रामराय मनकी आसा पाउ ॥ तोका दान गारव साउंटेक ॥ पांचपचासक संव सन
 पने ॥ प्रेउपा दुषान होइ ॥ चेतन पुरसक रुकोटवाली ॥ तोन गारन मुसंको ॥ २। ॥ रां०। गठ
 राजा राजक रतहे ॥ निमदन फरत दुयाइ ॥ कामको धदोनु गारदन मार ॥ तोरासी जदल च
 लाइ ॥ ३। ॥ रां०॥ गपान संमार सस्यासर पुरा ॥ कबुपर चाक बुषाया ॥ दासक बार चमे गठ ३
 पर ॥ जुगजात नि सागा वजाया ॥ धरां मराय मनकी आसा पाउ ॥ इति पद

सुर्कन माहासतका दन विचार पुर्वदसा	१ प्रच की गोवे	१ सुमो सुगाये	२ गगन में ३००
१ हिम चालो	२ व्याघात उपजे	४ शराचित्तो फल होवे	३ वरा वस ३५०
२ न्यात को सरदार मरे	३ राज विघ्न ३ प्रजे	१ नरल कुगाने विचार	४ चरा लासने से
३ जातराने चलावै कहै	४ प्रसुल उपजे	१ उदे गउ प्रजे	१ वाय कुगाने विचार
४ संतोष वार्ता सुगाय	१ देष रादी सा विचार	२ लाय घात उपजे	२ राज मन मान सुगा
१ गगन कुगाने विचार	२ सेउ प्रजे	३ शे गउ प्रजे	३ पुतर लासक हेइ
१ चार सेउ प्रजे	२ सासरा को सेउ प्र०	४ सुल प्रसुल	४ गरवासी ने ल विमु
		५ कब मही मानो	५ सुगी म सुगाय १

॥६॥ माथो फरक इतो प्रध्वान उलास होइ ॥ नितान फरक इतो ध्यान कनोलास होइ ॥ नाकिने
 मारव विचात इ फरक इतो मित्र नोलास होइ ॥ होठ फरक इतो प्रीति संग मग्न न सोजन वास
 होइ ॥ गाल फरक इतो स्त्री नोलास होइ ॥ कान फरक इतो रुमुसास होइ ॥ उपरा हाठ फर
 क इतो विजय होइ ॥ पुठ फरक इतो पराजय होइ ॥ धवा फरक इतो सो गलास होइ ॥ नास फर
 क इतो गात्रार सा होइ ॥ प्रथम गुन्य स्नान क फरक इतो स्त्रालास होइ ॥ सुषमा म ॥ १॥
 मरा फरक इतो बटानी हांति होइ ॥ बटिनी प्राप्ति होइ ॥ जाघ फरक इतो बंधन प्राप्त ॥ वग
 फरक इतो ध्यान लास होइ ॥ पुरष न इति मरा मग्न वास ॥ स्नान इडा वोनं गिवास ॥ ५
 ति नंग फरक इतो वानो विचार स पुरा ॥ तिथि न दिवस मिश्र वाण रुद्र त्रिवेक मुनि शशि यहु चंद्र म वकि
 युग्मा र्थ जन्म नवैय म शशि वैकि सधरा मेक वाधो विजग न गव त्वं स्त्री जाण म कं प्रशस्त ॥ १॥ दिग्भूल तिथि वा
 र दोष मशु र्ज न द्रा क योग तया रिक्ता धृष्ट म पी हृष्ट मशु र्ज दोषो राऊ स्वया आवा काल कर्च दतार कनया काल
 स्तथा योगिनी सर्व गोविन हंत योग म पर योगा धिराज स्वता ॥ २॥ तिथि वार न द्वा त्रैव एकी कृता त्रिधा न्यसेत
 ॥ द्वि त्रैव उर्गुण कृत्वा ॥ सप्त ष्ट रये ना जित ॥ १॥ चैत्र मास थी की जे दोहा तिथि जे तीने की जे गाढा ॥ यातां स
 रसा ना गहरी जे ॥ राजा सेती वार गिणी जे ॥ १॥ तिथि वार न द्वा त्रैव क बाकी जे ॥ परा ॥ ५॥ ६ गप रस ॥ ११॥ तेर स ॥ ३॥
 मतर ॥ १०॥ ६ गरा साय ॥ १०॥ तेवीस ॥ २३॥ परावा ॥ २५॥ गुदावती सा ॥ २०॥ ६ गती सा ॥ ३१॥ सतीस ॥ ३०॥ ६ गताला
 ४१॥ तेयाला ॥ ४३॥ सताला ॥ ४०॥ वमुहां सेने हि मंगल ॥ २॥ तिसर्वांग

३

३

जेस जे पेर दास गुठा ॥ फुरेतां ज म डुर होवे ॥ दुसरी फुरेतां सुख होवे ॥ ती जी फुरेतां गुण रणी दाहे ॥ चोपी फुरेतां सुसयाली
 देखे ॥ अंजवा फुरेतां ॥ बकुंत म्मा ठी है ॥ जेस जे पेर दीया ॥ सने नु गुलीया फुरेतां ॥ कुठ बु राई देखे ॥ पर म्म तन ला होये ॥
 ॥ २ ॥ जे ववे पेर दास गुठा फुरेतां दोलत पावे ॥ दुसरी फुरेतां जस पावे ॥ जे तीसरी फुरेतां सुसयाली देखे ॥ जे चोपी
 फुरेतां ॥ दोलत मान पावे ॥ जे चाची फुरेतां लडाइ होये ॥ जे सने नु गुलीया फुरेतां दुष ते बुटे ॥ ये रा दे न व दा फल ॥
 जेस जे पेर दान ॥ फुरेतां किसेना ललडाइ होये ॥ जे ववे पेर दान ॥ फुरेतां न लाई पावे ॥ ३ ॥ जे पहिले प हेर म्म ज
 फुरेतां तत काल फल पावे ॥ २ ॥ दु जे प हेर म्म ज फुरेतां ॥ ती जे दिन फल पावे ॥ ३ ॥ ती जे प हेर म्म ज फुरेतां दीन ॥
 लल फल पावे ॥ ४ ॥ ॥ चोपे प हेर म्म ज फुरेतां ॥ महिने तथा इक मास पावे फल पावे ॥ इसी तर रह विचारना ॥ पु
 रस दासं जा म्म ज ॥ जे पेर इसी दास वा म्म ज सुन है ॥ ५ ॥ लिखतं सेवारा मजी ॥ समत १५ ६ ॥ फल न बदी ब
 ७६ र बी वार ॥

॥ अथ अंगुष्ठ पुरकन का फल लिखते ॥ नैजी बीतरा जाय नमः ॥ बकुत जतन नाल ॥ अंगुले जमाने दीया ॥ कि
 तावां बिचों अंगु जमुदा करके ॥ अंगे रकं मकरके ॥ ये हवनाया है जो को ई अंगु पु रेतां फल ॥ नस दामानु मकरे
 * न * जे सिर बिचो फुरेतां ॥ हजार हीषत रे ब्रं लाई ॥ ते फिकर डुर होवे ॥ दोलत ते मुरात वा ॥ नसनु हासल होवे ॥ ते धन प्रा
 पु होवे ॥ १ ॥ जे सिर दीया ॥ १० ॥ सजिर दा फुरेतां बमियाई ॥ देह जुर बमियाई पावे ॥ २ ॥ जे दहे नी बलो सिर फुरेतां ॥
 पै मा देवे ॥ ते मुराद नुप फु चै ॥ ३ ॥ जे वाई बल ते सिर फुरेतां ॥ डुष डुर होवे तो मुरात वा पावे ॥ ४ ॥ जे सिर दे पिछे दहे ना
 बल पु रेतां ॥ घानु अया ना बुटे ॥ ते मुसाफरा करे ॥ जिथे जाये तिं छे धन पावे ॥ ५ ॥ जे सिर दे पिछे बाई बलं फुरेतां
 बमाई देवे ॥ अंत व मे न सके मुह तज होवे ॥ ६ ॥ **मंथे का फल लिखते ॥** जे मंथा बिंच ते फुरेता नह ॥ कुल दी तर है पर
 दे सजावे ॥ ते बहुत षट के लिया वे ॥ अयनी जग हस्रावे ॥ १ ॥ जे षं वा सं जी तर फो फुरेतां बमाई पावे ॥ २ ॥ जे मंथा
 षवी तर फो फुरेतां ॥ मतलब पुरा करे ॥ ३ ॥ **नफन फल लिखते ॥** जे सजी बलो फुरेतां ॥ पुत्र होवे जे षवी फुरेतां ॥ दो
 लत पावे यारों जी मिले ॥ ४ ॥ जे देहा दे बिचो फुरेतां ॥ प्रीत म मिले ॥ या प्रीत म दा षु सया ली देवे ॥ जे दो नो नवां इकठी या फु
 रेतां थोडा सा दालणी रहे वे ॥ ५ ॥ **मैत्र फल लिखते ॥** जे संजी अंष फुरेतां ॥ कष्टे देवे इजत ते सुष पावे ॥ ६ ॥ जे षं बी अंष फुरे
 तां ॥ दालणी रहे वे ॥ ७ ॥ जे संजी अंष फुरे बिच ते ता बुरा होवे ॥ ते गुसावाये ॥ ८ ॥ जे षवी अंष बिच ते फुरेतां ॥ डुष ते बुटे
 ते सुसाली सेवे ॥ ९ ॥ जे दो नो अंषा फुरे ॥ बिच तेतां विमारी होवे ॥ १० ॥ जे सजी अंष दा सजा को ना फुरेतां ॥ सुसाली देखे ते
 ऐसे हथ लजान ॥ अंगे र मित्र न स ते मिहरवान होवे ॥ ११ ॥ जे षवी अंष दा सजा को ना फुरेतां ॥ गई बसत लजे ॥ १२ ॥ जे सजी
 अंष दा षवा को ना ॥ फुरेतां अंगे स अंगे सुसाली देखे ॥ १३ ॥ जे षवी अंष दा षवा को ना ॥ फुरेतां बुराई पावे ॥ ते बषतावर पुत्र हो
 वे ॥ १४ ॥ जे षवी अंष दे न पर ली ॥ पलक फुरेतां ॥ इस मन नुठे ता लडाई होवे ॥ ते दालणी रहे वे ॥ १५ ॥ जे सजी अंष दा त
 ले दी पलक फुरेता ॥ बंद पावे ते मुसकल होवे ॥ १६ ॥ जे षवी अंष दी त ले दी ॥ पलक फुरेतां सुसाली देखे ॥ अंगे र व डे हो

देनु पड़वे ॥१॥ **पियनी फल लिखते** ॥ जेस जी म्रंष दी न पर ली पियनी ॥ फुरे तां सादी देखे ॥१॥ जेखी म्रंष दी न पर ली ॥
 पियनी ॥ फुरे तां मदेखे ॥१॥ जेस जी म्रंष दी त ले दी पीपनी ॥ फुरे तां वंजत धेद होवे ॥ सुत म्रदि ते म्रजा व पावे ॥२॥
 जेखी म्रंष दी त ले दी पीपनी ॥ फुरे तां वंजत डस मन ॥ न सनु जाली देन ॥ म्रते वंजत बुरा कहिन ॥२॥ जेस जी म्रंष
 दे म्रस पास ॥ फुरे तां सादी देखे सुसी होवे ॥२॥ जेस जी म्रंष दी जे दी दा फुरे ॥ तां दुष ते च जा होवे ॥२॥ जेखी म्रंष दी दा
 फुरे ॥ तां सच बोले ॥२॥ **कंन फल लिखते** ॥ जेस जा कंन फुरे ॥ तां मिले प्रपू होवे ॥ ते जगीर प्रपू होवे ॥ ते जगारत पावे तेन
 ली वात होवे ॥२॥ म्रते जेखी कंन फुरे ॥ तां कोई पियारा बिछ डे ॥ म्रते या किसे नाल लडाई होवे ॥ म्रते बनी दिलगी रा होवे
 संजे कंन जे कदी संजे कनरी कनुनी फुरे ॥ तां पाद साह के हजुर बगियाई ॥ पावे ई जत पावे ॥२॥ म्रते जे कदी खंवे कन दी कनुनी
 फुरे ॥ तां कुछ पंजे नुकसान होवे ॥ म्रते वसुल कुछ ना होवे ॥२॥ जे कदी संजे कंन दी कनुनी फुरे ॥ तां कोई बिछ डिया होया ॥ पि
 यारा मिले म्रते सुसयाली ॥ प्रपू होवे ॥२॥ म्रते जेखी कंन दी कनुनी ॥ फुरे तां दिलगी रहोवे ॥ ते पिछे ते सुसी होये ॥ नेरे फ
 ते पावे ॥२॥ **नंक फल लिखते** ॥ जे नंक फुरे तां ॥ दोलत पावे ते गम जाये ॥ म्रौर मेहनत ते बुटे ते ॥ परदेस जाय के वंजत ॥ नफा
 पावे ॥२॥ जे नंक सजी बल ते फुरे ॥ तां सुसी होये जे नंक खवा ॥ बल ते फुरे तां दुष दे ॥२॥ जेस जी ना सदा सुरा फुरे ॥ तां लडाई करे
 दिलगी रहोवे ॥२॥ जेखी ना सदा सुरा फुरे ॥ तां दुष होये म्रते के रंज होये ॥३॥ **मुह फल लिखते** ॥ जेसारा मुह फुरे तां सादी देखे ॥
 ते दोलत पावे ॥ यमन जी बसत थाये ॥ या मुह दा को ना सजी बल ते ॥ फुरे तां सुसयाली ते ॥ बखसिस होये ॥४॥ जे मुह दा खवी नरदा
 को ना ॥ फुरे तां माल हथ लजे ॥ ते मुरात बा पावे ॥५॥ **हेठ फल लिखते** ॥ जे न पर ला होठ फुरे तां ॥ डस मन रंद हो बन ॥ म्रौर
 रम सुक न सनु बोसा देवे ॥६॥ जे हेठ ला होठ फुरे तां ॥ मकसद नु पड़वे ॥१॥ जे दोनो हेठ फुरे तां ॥ दोसत न सनु न लीलां
 तय द करन ॥ **जीन फल लिखते** ॥ जे जीन फुरे तां ॥ डस मन नाल लडाई होवे ॥ **गल फल लिखते** ॥ जेस जी गल फुरे तां ॥ कोई कं
 म सवरे ॥ कहां ते कुछ म्रवे सुसी होये ॥६॥ जेखी गल फुरे तां कोई ॥ डर ते वस्त म्रवे ॥ या कोई जरू र कं मक रै सर मिंदा होवे

जे दोनो जंलं इकठाया ॥ कुरन तं वे निआ ज होये ॥ १॥ **तालुया फल** ॥ जे तालु बिं बें कुरे तं ॥ न्यामतें मुरात बा पावे
 ॥ १० ॥ जे सजी बल ते तालुया कुरे तं ॥ बिमार होये ॥ ११ ॥ जे तालुया खबी बल ते कुरे ॥ तं गम पेदा होये ॥ १२ ॥ **दन फल** ॥ जे दं
 द न पर ले ॥ सजी बल ते कुरन ता ॥ बेटा खुब होये ॥ जे दं खबी सजी बल ते कुरन ॥ तं हार म दे पे सै हा थल जन ॥ १३ ॥ **ठोमी फल** ॥ जे ठोमी कुरे तं ॥ हासन बाला मानुष मिले ॥ याल डाई होवे तं फते पावे ॥ १४ ॥ **जर दन फल** ॥ जे जर दन बिच ते ॥ कुरे तं पे
 सै हा थल जन ॥ बमाई पावे ॥ १५ ॥ जे जर दन खबी बल ॥ ते कुरे तं दुख पावे ॥ ते मेहनत करे ॥ १६ ॥ **मोटे फल** ॥ जे खंवा मोठा कुरे
 तं संतुना ल मेला होये ॥ जे सजा मोठा कुरे ॥ तं न्यामतें ओर बमाई पावे ॥ जे खबी बल दा मोठा कुरे ॥ तं मकसद हासल
 होये ॥ ते दिल दीचा हपुरी होये ॥ १७ ॥ **बाजु फल** ॥ जे सजा बाजु कुरे तं ॥ छोटा गम दे पे ता फेर खुसया ली दे पे ॥ ते धन
 हा थल जे ते मित्र माले ॥ जे खंवा बाजु कुरे तं ॥ कुब खो वे ते फेर पावे ॥ ओर खुसया ली दे पे ॥ जे दोनो बाजु कुरन तं ॥ कि
 सेना लल डाई होवे ॥ या घर बिच जो रुना लल डाई होवे ॥ १८ ॥ **पोहवे दा फल** ॥ जे सजा पोहवा कुरे तं ॥ न सदा बुरा खा
 हन बाले सजा पावन ॥ जे खंवा पोहवा कुरे तं ॥ पात साह दान ज दा की होये ॥ १९ ॥ **हये जी दा फल** ॥ जे सजी हथेली कुरे तं ॥
 दोलत ते इजत पावे ॥ जे खबी हथेली कुरे तं ॥ न्यापने मनो रख नु पावे ॥ **नगली या दा फल** ॥ सजे हथकी नगली दा फल ॥ २० ॥ जे
 मंगुठा कुरे तं ॥ मकसद हासल साता बी हो जावे ॥ जे डूसरी नगली कुरे तं ॥ डूस मन गाली देन ॥ जे तीसरी नगली कुरे तं ॥ खु
 सया ली दे पे ॥ जे चोथी नगली कुरे तं ॥ मित्र लाज ते वे ॥ केवुरा होये ॥ जे पंचमी नगली कुरे तं ॥ खुसया ली होये ॥ महेमान नुस
 दे घर आवे ॥ २१ ॥ जे सजे हाथ दी नगली या दा ॥ पितर कुरे तं बमा दुख पावे ॥ जे सजे हाथ देन ख कुरे तं ॥ किसेना लल डाई होये ॥ २२ ॥
खवे हाथ दा नगली या दा फल ॥ निषते ॥ मंगुठा कुरे तं दुख पावे ॥ डुजा कुरे तं लडाई होवे ते हारे ॥ जे ताजी कुरे तं दिल गार होये ॥
 जे चोथी नगली कुरे तं ॥ सोना रुपा हा थल जे ॥ जे पंचमी नगली कुरे तं ॥ नया मत पावे ॥ **रिदा फल** ॥ जे रिदा कुरे तं ॥ मरा बा
 लत फल पावे ॥ सब कार्य सिध होये ॥ **मंम फल** ॥ जे सजा मंम कुरे तं ॥ दोलत पावे ॥ जे खंवा मंम कुरे तं ॥ नजर ना लजे ॥

२

॥**पिठफल**॥ जे पिठ फुरेतां ॥ अजिनाषा पुरी होये ॥ जे सजीव ज पिठ फुरेतां ॥ नसदारिजक कम होये ॥ जे बबीव ज पिठ फुरेतां ॥ संतत होये ॥ जे पिठ बिबो फुरेतां ॥ दोलत मदत करे ॥ १ ॥ **बगलफल** ॥ जे बगल सजी फुरेतां ॥ माल दानुक सान होये ॥ जे बबीव बगल फुरेतां ॥ बीमार होये ते दरदना लपुकारे ॥ २ ॥ **बबीफल** ॥ जे सजीव बबी फुरेतां ॥ दिल जार होये ॥ जे बबीव बबी फुरेतां ॥ बलाई जामते ववे ॥ ३ ॥ **कमरफल** ॥ जे कमर फुरेतां ॥ मेहनत ते बुटे बजाना दं बीया होया मिले ॥ **चुतडफल** ॥ जे सजा चुतड फुरेतां ॥ माल पावे ते सुसा होये ॥ जे बवा चुतड फुरेतां ॥ किसे जागा दीह कुमत मिले ॥ ४ ॥ **सिनाफल** ॥ सिना फुरेतां ॥ कोई पियारा परदेस ते म्याये मिले ॥ जे सिना सजीव ज ते फुरेतां ॥ दुख देखे ते बंदी पावे ॥ जे सिना बबीव ज ते फुरेतां ॥ कोई बुरा कर्म कारावे ॥ ५ ॥ **चुचीफल** ॥ जे सजी चुची फुरेतां ॥ फिकर करावे ॥ जे बबी चुची फुरेतां ॥ माल न्यामत पावे ॥ ६ ॥ **पेटफल** ॥ जे पेट फुरेतां ॥ सुसयाली पावे ॥ ७ ॥ **बूझीफल** ॥ जे लिज फुरेतां ॥ न्ययने मतलब नुप्र कुंवावे ॥ ८ ॥ **गुदाफल** ॥ जे गुदा फुरेतां ॥ माल ते वेसे पावे ॥ **राणफल** ॥ ९ ॥ जे सजी रान फुरेतां ॥ माल नलाई पावे ॥ जे बबी रान फुरेतां ॥ किसे देखे ते सुसयाली देखे ॥ जे सजी रान न्यदर ते फुरेतां ॥ माल ते रतवा पावे ॥ जे बबी रान न्यदर ते फुरेतां ॥ नलाई पावे ॥ १० ॥ **जोफेफल** ॥ जे सजा जोफा फुरेतां ॥ दिल जार होये ॥ जे बवा जोफा फुरेतां ॥ इस मन नस दे नसन ॥ जे सजे जानु दासी र फुरेतां ॥ इस मन नाल जडाई होये ॥ पिठे ते नस नुबुरा कहाये ॥ जे बवा जानु फुरेतां ॥ इकत बेने ॥ ११ ॥ **पिनीफल** ॥ जे सजी पिनी फुरेतां ॥ ता कोई नस नुतेह मतलजे ॥ जे बबी पिनी फुरेतां ॥ इस मन नस देखे राव होवन ॥ १२ ॥ **गिटेफल** ॥ जे सजा गिटा फुरेतां ॥ सुसयाली देखे ॥ जे बवा गिटा फुरेतां ॥ किसे नाल जडा होये ॥ १३ ॥ **न्यूनीफल** ॥ जे सजा पैर दी न्यूनी फुरेतां ॥ किसे जगह वेव ते जागीर ॥ नस दीवर करार होये ॥ जे बवे पैर दी न्यूनी फुरेतां ॥ सुसयाली होये ॥ **पैराकीतलीकाफल** ॥ जे करस जे पैर दी तली फुरेतां ॥ बकुंत सुसा पावे ॥ जे बबी तली पैर दी फुरेतां ॥ किसे दिइ जतरा जा देखे ॥ जे दोने तली कां ॥ फुरनतां मुसा फुरी देखे ॥ ते दोलत पावे ॥ १४ ॥ **पिठफल** ॥ जे सजे पैर दी पिठ फुरेतां ॥ नस ते सनरा जी होवन ॥ जे बवे पैर दी पिठ फुरेतां ॥ ते माल हाथ लजे ॥ **पैरकीनुगलीयाकाफल** लिखते है ॥

२

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	॥ वददशनाममय
रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	चक्रं ॥ अमावास्याकी
पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	पु	घटीदणमैघटाइदीजे
म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	पुलैतिणमाहोदिनघ
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	टीजोमिजेपतेसू
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	र्यकीराशिदिषि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	जैअरराहकीरा
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	शिदिषिजेतेराऊ
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	कीअरसूर्यकी
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	राशिकेवावि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	काघटीकैतिण
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सुखेघटीअधिक
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	होइतोपनिवाकैदि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	नबंदोदयअरजेघा
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	टिकैतोबीजकैदिन
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	बंदोदयऊवेलिषि
सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	तेशिषावातसंदरेण
रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा	

ईसानक्षत्राण	पूर्वदिशि	अग्निक्षत्राण
हाणिदिषालै अशुभ	कामचिंततोहोइतो कामकोनात्राकहे	अचित्तोसयदिषालै
उत्तरदिशि		दक्षिणदिशि
अचिंतोकांल हऊके	स्वानकानफमफ मावेतिणकोवितार	लातसंतोषउपजावे
वायवक्षत्राण	पश्चिमदिशि	नेत्रक्षत्राण
कलेत्राउवाट अशुभ	अशुभअरिष्टदे पाले	मनसंतोषउपजावे
निषितंपीथाआत्माये		

<p>मानव शानक मित्रमिले वायव्यरोगउपज</p>	<p>मनवर्द्धित पूर्व २ लक्ष्मीलाभकहि २ अर्धवर्द्धितयुनावे ४ मृतकदेखाले</p>	<p>अग्निवर्द्धित ए २ मित्रसमागम २ लक्ष्मीश्रीप ४ विष्णुजय</p>	<p>इमानक १ जात २ सज्जनमिले २ प्राकृणाशवे ४ वायव्यरोग</p>	<p>पूर्व १ मनवर्द्धित २ धनलाभ २ नवीवात ४ मृतक</p>	<p>अग्निवर्द्धित १ अर्धवर्द्धितयुनावे २ मित्रमिले २ लिपिमाता ४ जोचोतजय</p>	<p>वायव्यमवालेतिपराविचार॥ इहोकावक सुणिजीजीयेमायावायापादेह तरेतिहोम नेलीयेसाततागधरेह॥ कवितव्येएकल तसुषबीजेऊनातधरिआवतीजेमिष्टआह २ अर्धवर्द्धितकागवतावेपाचोअगारयएमरागा येजारदिशावे॥ अगारयोआकआविष्णुफल विधरिआवइसममेकागसुनावेवयाणबोल आपणचंदमइवायव्यमवयाणफलाफलजाण अमरसाकरआनंदमइ॥ इतिश्रय॥ श्लोकआत्मतायात्रिगुणीकृत्यात्रयोदश समन्वितांसप्तलिस्तहरेकागीशेषकेतक वदेत्॥॥ वर्धमभ्यजतीकुलदरानीरविव राजवेजितराधमकुवे१२महीनारीजो जेतितराअरुनाजकुवेअहमिलेव</p>
<p>उत्तर मित्रश्रीतोष २ गजकरामिले २ प्रव्यलाभ ४ जोजगला</p>	<p>उत्तर १ लक्ष्मीलाभ २ मित्रसमाग २ गजवलाभ ४ प्रव्यलाभ</p>	<p>उत्तर १ लक्ष्मीलाभ २ मित्रधरिजो</p>	<p>उत्तर १ जात २ सज्जनमिले २ प्राकृणाशवे ४ वायव्यरोग</p>	<p>उत्तर १ मनवर्द्धित २ धनलाभ २ नवीवात ४ मृतक</p>	<p>उत्तर १ अर्धवर्द्धितयुनावे २ मित्रमिले २ लिपिमाता ४ जोचोतजय</p>	<p>उत्तर १ लक्ष्मीलाभ २ मित्रसमाग २ गजवलाभ ४ प्रव्यलाभ</p>
<p>वायव्यवर्द्धित १ सुषवात २ जात २ वस्त्रलाभ ४ शानरोग</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ गजवलाभ २ मनवर्द्धित २ गजमंतरो ४ गजआलीद</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ लक्ष्मीलाभ २ मित्रधरिजो २ मित्रमिले ४ जोचोतजय</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ जात २ सज्जनमिले २ प्राकृणाशवे ४ वायव्यरोग</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ मनवर्द्धित २ धनलाभ २ नवीवात ४ मृतक</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ अर्धवर्द्धितयुनावे २ मित्रमिले २ लिपिमाता ४ जोचोतजय</p>	<p>वायव्यवर्द्धित १ लक्ष्मीलाभ २ मित्रसमाग २ गजवलाभ ४ प्रव्यलाभ</p>

॥ इवरा वा लनवा मो विवा निवसवो लनने विविवा लिनवानो विवरा ॥

इसा निरुक्ति	शर्वदि स	अमि कृणा	इसा निरु कृणा	शर्वदि स	अमि कृणा
इवपाति	राजलंग	देसनेम कहै	मासमधेवार दैवे	लासदिवा	अमि लय कहै
स्त्रीलास	राजदल	जाराधी प्रजास	अमिलय कहै	रोगसय	इव पाठ कहै
राजश्रीना	देराउ पद	राजा श्री कोना	राजमरण कहै	कविला	उव पाठ
उत्र पाति	गात्र पी मा	पुत्र को प्राप्ति	वापदनास	तुनिल	पुत्र को
वायु कृणा	पश्चिम कृ	नेरित कृणा	उत्तर दि मिा प्रा	उव दि स	दाह कृणा दि रा
कारमात कहै	परचकाग	दिनधमध	देसबलास	मिहली	अलंत कल प्रा
वज्रपदलास	अमिलय	शेष्ट सय प्रा	स्त्रीहत्या कहै	रात्रवोले	स्त्रीममा गम कहै
कलह कहै	रात्रु नाश	रोग कहै	अश्रुपाति कहै	तेहरोवि	सय प्र सि कहै
गोत्रनाश	वलिजल	नित्रहामि	विठ म्या मिलै	बोरा प्रा	राग कष्ट कहै
उत्तर दि रा	उव दि रा	दुःखिण वि	वाय कृणा	पश्चिम	नेरित कृणा
मोटी स्त्रीनाश	शृंगसक	दिन दोयमे	चोरलय कहै	सर्प दष्ट	रोग कहै
बोरलय कहै	तेहनै बोले	सर्प सय	इव प्रास कहै	बोरलय	अलंत लाल
लोजन प्रास	इ विणो	मरण सय	अश्रु सवा ताकि है	इव लाल	इव प्राप्ति कहै
सुख वाता	विवा रश	राज प्रमोद	गृह सून्यता	हर्ष निरत	राज प्रसाद कहै

हरादिनको

वीक वि

~~वीक वि~~

दिवसत वारा तिसमान

ईशांनिकुलि
लास दिषावे
शगोवगयो आवे
उमित्रमिलावे

पूर्वदिशिदे अग्रित्क
वेवितक अग्र विवा
रलक्ष्मीला मित्र शमा
असपवाता लक्ष्मीला

इसांनिकुलि पूर्वदिशि अग्रित्करा-
मृतक दिवा धनशायक हे स्त्रीसमागम
अग्रिलयक हे स्त्रीसमागम कलह दिषावे
उग्रिलय सुषसंतोष

वायव्यगक

मृतकवा अ वितल

रवालवक हे कार्यनास मित्रदुर्सन

उत्तरदिशि

उर्ध्वदिशि पश्चिम

उत्तरदिशि उर्ध्वदिशि दक्षिणदिशि

मित्रसंतोष
गऊर मिले
लक्ष्मीलास
सोजनलास

गंकनो गामयात्रा
विचार दिमन वं वि
नग्नैरात्रि गामवलावे
सरीषामाषा लास दिषा

रालयक हे रामलवालोदि फ ऊला आव
इव्यशायक हे वसत वारात्रि सुषसंतोष
रा जामररा तिह नोवि इव्यशाय
वोरलय वार लिषते मररा सुरावे

वायव्यक
सुषसंतोष
लासवता
वसलास
वायव्य

पश्चिमकरा नेरतित्करा
गामयात्रक लालदिषावे
मनवं वितक मित्रवरमो
गामवलावे मित्रदुर्सन

वायव्यकरा पश्चिमदिशि नेरतित्करा
विद्यालास सुषसंष सप्त वाव आगम
कलह दिषा परमररा मुया अ वित्या सव
स्त्रीसमागम धनशायक जयवाता
सिद्धलोउन विद्यालास विजयवर्ता

श्रीवाशिष्ठिग्रीवा वक्रग्रीवाधवाधनः श्रुतग्रीवाचट्टपाच ते सध्वेपरिवर्जिताः ७ ग्रीवाचट्ट

जेहन उवां धउ वृषन समाने वली को लीना संनसारा तेमनुष्य राजा पृथ्वी पति थाइ महानोगी थाइ महामनवंत ८ इति पांशालक्षणकस्यो

वृषस्कंधमोयस्य कदली संन एव च सर्वेति पार्थिवो क्रेया महानोगी महामनः ८ स्कंधलक्षणं

जेहन इचं समासरा पो मुहद्वदति को नर महामुग्मी मृगला उंदर मरा पो मुहद्वे इते नर मनुष्य नाम्नी नयाइ ९ यद्यो डायरा पो मुख छे वे तेनर

वंद बिंबोय मवक्र धर्मशालि मयानवैत् मृग मृक वक्राये तेनरा नाम वलिताः ९ दयवक्रा नरायेव १० स्व

॥ चिकी गावें ॥ गाबडि नाषे देह कंप २ निरोध काली ३ यणुषा मवा जै ४ स्वादन जाणे ५ षड अनिष्टो ७ कोने बाहिर ८ स्वा

वेदकठे

॥ अथ वेदकठे ॥ ग्रीवा नमः शरीर कंप अमरी कृष्णा वक्र कासना नास्ति स्याद बुद्धावति ५ श्रवणे नास्ति र

जीन बोटी नेत्र मोटांदि नष १२ दंत दोव काला १२ मीट घणी ऊइ १३ सासन नैन पूजइ १४ अमववा वादे हाथ मुंह में

वौ जिह्वा नेत्र अफार नरवा निदंत अधरा त्रपामा नमो दंत तथा ॥ स्या सो ना सिन इज नंत मववा दूर तो मुखे वा

हइ १ नाक बार बार ३ कर्क आवै ४ अस्तर एकी दंत ऊमे लें बिद पौ २ काली जीन २ अतिसार से ३ जोर ऊषा दिहकी जोहु आवाणे

हन १ नासा सुं टन कर्क सार रजनी विट दंत की पावली ॥ कृष्णा जिह्वा रथो फवमनं दिक्का मृघ सृष्णा

देह ताडो २८ टषा घणी २९ आफरोर जे टषे २९ लहरि दांत सु विकल ऊ एलक्षण जे हने ऊइ ते रोगी यो न जीवइ १ इति

का ॥ काया चीत टषा च भाते उदर मृषा ज्वरो ॥ दस्कटं वै कल्पं इद चेष्टितं स पुरुषो सीधं स मृत्यु करो १ इति

श्रीरोगि रालक्षण ॥ वरये इ विद लथी सूख मांस वा वै तो वेह ज्वर बालाने मगोरु वरज जिअती या आप्ता पुषे तो मेणु न वर जीए

रोगिणां शर रिष्टा वै ॥ वर्जये हि दलं शूली ऊष्टी मांसं हारी घृतं गोधूमा नीअती सारे चक्षुरो गेव मेणु नं १ ॥ श्री

जसद प ४ अत मो १२९ इमा हन द प ५ मा १३

^{नील} रक्तः श्वेतः पीतकः ^{स्वर्ण} पारलोमः ^{ध. संसृते विविध अतिरक्त पातश्चेतः ॥ १ ॥} पीतुः श्वेतः ^{काव. ने, वसुवर्ण} सुवर्णः ^{मल} पीतः ^{वर्ण} श्वेतः ^{वर्ण} कवुरो वल्लु
 वल्लु। मालिनीयां जादाशिवर्णः कामण। १॥ विक्को कृष्णकैचिकित्तो - श्वेतो कवित्तु
 दानो विदग्धावसितः शानिः स्यात् ॥ इत्यपिपाठः ॥

॥ अथ आषात्री जप्रभात समे वायुवायंते हनो विवारः पूर्वमेवायवायता
 रुमो सुगालवायक कणक्षनकोरी ६ लहे अगनि रूणि ७ सूर्यजगते वेलाये
 वायता घणने मोडु काले इवावायतीह पाणि आवेक कणकारी १०५ घायद पिल
 दिये वायता आगामवर पेडु काल कलसी १ कोरी १२० लहे नैरति वायवाये
 धरमीषा मावर मोवर अघायक कणक्षन कलसी ५० ६० लहे कोरी पश्चि
 मवायुघी सुगाल कण कलसी २० २५ लहे उत्तरदिशि नो वायवा इतो सुगाल
 कण कलसी कोरी १६ लहे इयाने पिल सुगाल कण कोरी १० लहे कलसी
 दीवा इति आषात्री जवायु विवारः ॥

॥ अंगविद्याप्रवक्ष्यामि । नात्र देन स्वयं कृता ॥ अंगं नानामात्रेण । ज्ञायतेव शुभाशुभं ।
 १ पञ्चमानेभ्यो शोच्यं । महालाभविनिर्दिशेत् ॥ २ ॥ हरिणं धनधान्यं च । प्राप्नोति जात्र संस-
 य ॥ सुषं वनालिकावदं । तथा अरण्यमेतत् । यद्येतां निस्पृशन् पृच्छेत् । प्रयत्नः प्रजा-
 यते ३ ग्रीवास्संघं तथा । सृशन् यदिव पृच्छेत् । मध्यमफलं वेत्ति । केशेन सह जाय-
 ते ४ उदरं पृच्छन्निव । स यः सृशन् पृच्छति । अथवा दोनवेत्त स्य । वधबन्धनमेव च ५ का-
 र्त्तुं लब्धं शोचि च । सृशन् यादव पृच्छति । कन्यालान्नेन वेत्त स्य । पुत्रलान्नेन मेव च ६ ॥
 नाशुतथा तथा गुह्यं । पादयोः यदि च सृशेत् । नागमन्त्रं वेत्त स्य । केशेन सह जायते ७ सृ-
 शन् । नोयदाके शर । महादुःखं प्रजायते । न तस्य जायते सिद्धिः । न च कार्यं न विष्यति ८
 फलपुष्पं तथा दीपं । गृहीत्वा यदि पृच्छति । महालाभं जयत्येव । तथा सर्वशुभं वेत्त ९ श-
 स्त्रं काष्ठं तथा वीरं । अंगारं स्रजं च पृच्छति । नयं वेत्त वेत्त त्र । ग्रहदोषो प्रजायते १० ॥
 आरामेषु यदा प्राप्तेत् । सुखं स्नाने तथैव च । प्रह्वकस्य न वेत्त स्य । सिद्धिः सर्वनिर्भयः ॥ ११ ॥ हरिणं रा-
 ज्ञो ज्ञेयं । अन्नं पातं तथैव च । दृश्यते सर्वसंपत्तिः । यत्किंच न न निश्चितं ॥ १२ ॥ ज्ञानलान्नेन दीप्तौ
 रमणाने तीव्रमनोरथः । उपविश्यादा प्रच्छेत् । कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १३ ॥ स्नाने शुक्लदंष्ट्रे । मूत्रा-
 गारे च नृपये । एतेषु कार्ययः प्रच्छेत् । कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दीपं तथा गंधान् । गृहीत्वा यदि
 प्रच्छति । न तत्र प्रह्वकस्य । कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ १५ ॥ देवदंष्ट्रे नदीतीरे । स्नाने चैव मनोरमे । उपविश्यादा
 प्रच्छेत् । तदा सिद्धिः सर्वथा ॥ १६ ॥ ज्ञानं प्रह्वकस्य । अंगं नानामात्रेण । ज्ञायतेव शुभाशुभं ॥

॥ बीकनो विचार निषाये छै हिस विदिस रूनी पाववी जाणवी हरव दिस बीक होय तो लाभ होइ। अग ति दिस बीक होय तो
 हाण होइ। दसि ए दिस बीक होय तो मरण होय। नैरत कृण बीक होय तो रोग भूपजै पठि म दिस बीक होय तो संपदा होय वाव कृण ठी
 कहोय तो सुत वारता सुणावै। उत्तर दिस बीक होय तो धन लाभ होय। ईशान कृण बीक होय तो वैरी नो वियोग थाइ कि हं ईजात
 साहू बीक होइ अथवा जीमणी होइ तो गम गान कर्जै। गाम जाता नावी बीक होइ अथवा हरव की होय तो चारु होय गाम पैस
 तां साहू जीमणी बीक होय तो अति वास्त होय॥ ॥ इति श्री बिका विचार नियमः॥ ॥ स्वान गाम चालतां नावी नलो प्राप्त मां हि
 पैस तां जीमणी नलो प्रवृथी नावो होय तो आरोप अर्थ लान अथवा गाम चालतां स्वान देषी वली वैसी नही तो चोप धन लीजै
 म मां हि पैस तां जीमणी सरवै तो मिष्टाना जा जन मिलै स्वान गाम चालता जीमणी होय तो अथवा नावो होय तो अर्थ लान होय म
 होय जीमणी होय तो अर्थ ना सै गाम चालतां मुह मांस लेइ सा मो आवतो देषी ये तो अर्थ देषी ये अर्थ लान निश्चै कहै गाम चालतां
 पा सै पुव स्वान चानणी सुरमतो देषी ये गाम अथवा नगर अर्थ लान कहै पाबो मुह कर्तो स्वान कान फम फम वै तो गाम चालतां
 गाम चालतो अन्या देइ मुष माली आवै अथवा जानो देषी ये तो चीत व्यो फलै चालतां स्वानरी सै नुसै तो वंधन कहै वा
 स्वान पग पुरसं नुय पुणै तो गाम तरे न जाइ चालतां स्वान विनोद करै गाम तरे नाल होइ मैथुन कर तां देषी ये तो वंधन सिद्ध

स्नानलीलाप्रपञ्चसुभातौ जातां देवीयै न जायते स्नानमाद्यो कान्तमग कर। पुजाततो होइ तो न जाइये कलह रूप ज चाल
अथै मुह बोले तो तथा लभतो उदेग कहै घर साहे नही ताथी। सुधरती सुफरसे सुवेतो हाथ न कहै वालता स्नान वे लु उपस
वै तो न ह लात्र॥ ॥ इति स्नान विचारः नयन च। इति विधिः निषीकृतः॥

करे मि नते को अहं आहार पोसहं अ व उ दे अ उ अ री र अ का रु अ व उ अ वा चार को अहं अ व उ र्व न चे र पो न ह
अ व उ च उ वि ह पो अ हे वा ए मि जा व दि व अ ए य जु वा अ मि उ वि हं ति वि हे ए मि ए ए वा या ए का ए ए न कर मि न व
र ने मि त अ न ते प त्रि क मा मि नि ह मि ग रि हा मि अ पा ए को अ रा मि इ ति को अ रु प च या ए वि धि
आ ग र र्व लो क मा र्व ह वि हं ज लो अ हं अ लो ध नो जे स पो अ ह म मि अ अ र्व दि या जे वि र्व ते वि १ को अ
अ ह र ना वे अ अ ह र ई ष वे र न धि र्व ह लो वि ह य न र य ति रि य ग र को अ वि ह अ प म ते ए

53/25

॥ अथ अंग ज्ञान विंता कहे उंचो जो वैतो जीव विंता नीचो जो वैतो जीव विंता सम दृष्टिः वाम दृष्टाण जो वैतो धात्रु विंता जो एक जीमणे जो वैतो पुरुष विंता एक नावा
दिशि जो वैतो स्त्री विंता जीमणे हाथे माथे फरसे तो वस्त्र नाई विंता बांधो फरसे तो मित्र विंता मुखे फरसे तो धर्मा नीति विंता निला डेला न विंता कपोले सजन विंता कलें
ऊग डौ विंता अंगुली फरसे तो बोकू विंता पगे गामंतर विंता जंघे चोप विंता इति ॥ मेष लग्ने आग चतित स्याग्रतो ह्यगो मिलति २ वृष लग्ने आग चतित स्याग्रतो
एतो वृष जो मिलति २ मिथुन लग्ने आग ते स्याग्रतो पुरुष मूली मिलति ३ कर्क लग्ने आग ते सति ६ एतो मूली धनि हस्ते मिलति ४ सिंह लग्ने आग ते स्याग्रतो वि
ला जो मिलति ५ कन्या लग्ने मूली मिलति ६ अश्वि दृष्टाण शस्त्रं उल्लूको करोति ७ उल लग्ने मूली मिलति ७ धनु लग्ने मूली मिलति ८ श्रवण लग्ने मूली मिलति ९
लघु कषो मिलति ६ धन लग्ने पुरुष सुंदरो मिलति ९ मकर लग्ने विधवा स्त्री नीच दासी वामिलति १० कुंज लग्ने मूली मिलति मृत्तिका हस्ते मृत्तिका पात्र कृतः ११
मीन लग्ने पुरुष सुगम यो मिलति १२ इति द्वादश लग्न विचारः २ विमूर्त्तौ न वे लग्ने लग्ना षष्ठः शनीश्वरः दशमस्थो न वे द्वादशे गमने शुभ संपत् १ नौ मेष ह्यो गुणे
सप्त बुध रत्नारि लग्नपाः मूर्त्तौ शुक्र मूर्त्ति निर्मदो आत्रागत्र मर्दत्फलं २ बुध लग्न द्वितीयस्थे मूर्त्तौ मूर्त्त्येदं न समा तत्कालं गमनं देवां महानला जो रिशु कथः
३ लग्ने गुरुः शनी वः ह्ये लग्ने वः नृपुत्र समाः आत्राकाले न वे द्वादशे तस्य लान पदेरं ४ गामांतर विचारः षष्ठाष्टमे शुद्धये स्यात् पंथी न गृहमागतः दृष्टी
शुतो बुध शनिः पंथी तत्र न तिष्ठति १ शुक्र राहु वनदमौ सप्तमस्थो न वे ह्यरी तदा कुशल ह्ये मेरा दिना ति नय पांथतः २ आगम पृच्छा ज्ञानं ॥ राशी नाम लिमी
न सिंह च वनदमौ पुरुष शीतनं कन्या कर्कट न करान्मि सदनं याप्याश्च न मंदिरं राशौ गोश्व उलाश्व युग्म सदनं त्रास्त प्रतीच्यां पुरुषं पुंसां कुंज ह्यजरा शीत
जनां सोम्या न न स दृष्टं १ इति ॥ संवत् मां देही न करि इक सो अरु पयैत्री मारुप शेष अंक त्रा का तणा जालो विश्वावीम १ सहस्र बती स अरु चार लष कलि
युग एह प्रमाण ४३२००० चारती न डूड गुण सुकृत त्रेता द्वापर जाण २ शाकामां दे जो मीये तीन मह अमृत एक ३ ७ ए उगण्या मी ऊपरि अधिक कुवे
गत कल सुविवेक ४ इति गतिकलि वैत्री मा वसि वार नृप मंत्री मेषे वार मिथुन रवि सोरधणी कर्क सस्याधि पसार ५ आमा ठे रोहिलि रिबे जला
धिपति जो वार काती मां दे मूल दिन कोट बाल सो वार ६ इति राजा मंत्री ज्ञानं ॥ शाकामे डूड मे लिक रि वारे नागे देइ शेष रदे सो वै नथी वर्षा नाम कह
इ ७ इति वर्षा ज्ञानं ॥ तीन जो मित्रा क काल मे बिजुं नागे रहे जेइ शेष रदे सो वै नथी वर्षा नाम कह इ ७ इति वर्षा नाम आवर्त्त सावर्त्त २ उक्
रह २ जोण ४ नाम गिलि मेद ६ इति मेद नाम ॥ मेष रवि स्रक म म म जे दिन रुषा हि होइ ते धरि हर्व म सुद्र मे गिलि रोहिलि जगि सोइ ९ डूड डूड रु
ष म सुद्र मे इक तट नै इक अंधि इक पर्वत इक संघित ट रोहिलि म निबंध १० इति रोहणी विचार माली घरे अ सुद्र मे तट धोबी के धाम मंधो वा
ओ बलिक घर गिरि कुंज नार सुवाम ११ इति शमारी वा सो रवि दस १० विश्वा वीर २० सति नोम अ ६६ बुध वार १२ सोल ह्युद्र १६ अचार १६ च
गु यात्र रत्न निहार १२ कर्कर विजिण वार मे ताये न सो विचार ॥ शाक अंक त्रिगुण उकरी सातां देई नाग वधत डूड गुण पण म श्रि व विव

॥ अथ अंग ज्ञान विंता कहे उंचो जे वै तो जीव विंता नीचो जे वै तो जीव विंता सम दृष्टिः वाम दृष्टि जे वै तो धात्र विंता जो एक जीमणे जे वै तो पुरुष विंता एक नावा
दिशि जे वै तो मूर्ति विंता जीमणे हाथे माथे फरसे तो वक्ष नाई विंता बांधो फरसे तो मित्र विंता मुखे फरसे तो धर्मा नीति निला डेलान विंता कपोले सजन विंता कर्ण
ऊगडो विंता आंगुली फरसे तो बाल विंता पगे गामंतर विंता जंघे चोप विंता इति ॥ मेष लग्ने आग चतित म्याग्र तो चागे मिलति २ वृष लग्ने आग चतित म्याग्र
एतो वृष जे मिलति २ मिथुन लग्ने आग ते म्याग्र तो पुरुष मूर्ति मिलति १ कर्क लग्ने आग ते मति २ एतो मूर्ति धर्मि हस्ते मिलति ४ सिंह लग्ने आग ते म्याग्र तो वि
लाफो मिलति ५ कन्या लग्ने मूर्ति मिलति ६ अश्वि दृष्टि राहं उलूको करोति ७ उल लग्ने म्यागो मिलति ७ ध्रुवा अंग दीनो पुरुषो मिलति ७ वृश्चिक लग्ने कपि
लपुरुषो मिलति ८ धन लग्ने पुरुष सुंदरो मिलति ९ मकर लग्ने विधवा मूर्ति नीच दासी वामिलति १० कुंभ लग्ने मूर्ति मिलति मृत्तिका हस्ते मृत्तिका पात्र कृतः ११
मीन लग्ने पुरुष सुगम यो मिलति १२ इति द्वादश लग्न विचारः २ विमूर्त्तौ न वे लग्ने लग्ना षष्ठः शनीश्वरः दशम म्यो न वे छंदो गमने शुभ संपत् १ नौ मेष एते गुणे
सप्त बुध रत्नारि लग्नपाः मूर्त्तौ शुक्र मूर्ति निर्मदो आत्राग उर्मद फलं २ बुध लग्न द्वितीय म्ये मूर्त्तौ मूर्त्ये दिन्न ममा तत्कालं गमनं देवा मदानला नोरि शुभयः
२ लग्ने गुरुः शनी वाहो लग्ने च नृपु मसमाः यात्रा काले न वे दृश्य तस्य लान पदे ४ गामांतर विचारः षष्ठाष्टमे शुभ रवे स्थित पंथी न गृह मागतः दृष्टी
शुभो बुध शनिः पंथी तत्र न तिष्ठति १ शुक्र राहु वन दमौ सप्तम म्यो न वे हरी तदा कुशल ह्ये मेण दिना ति नय पांथतः २ आगम पृष्ठा ज्ञानं ॥ राशी नाम लिप्ता
न सिंह च वन हर्षा मुर वंशो ननं कन्या कर्कट न करानि सदनं म्याग्र शुभं मंदिरं राशौ गोश्रुला यद्युगम सदनं राक्षस प्रतीच्या मुखं पुमा कुंभ षाजरा शिना
जना मो म्या ननं स दृष्टं १ इति ॥ संवत् मां देही न करि इक सो अरु पेत्री मार ३५ शेष अंक ज्ञा कातण जाणे विश्वा वीस १ सहस्र बती स अरु चार लष कलि
युग एह प्रमाण ४३२००० चार ती न दुइ गुण युक्त त्रेता हा पर जाण २ शाका मां दे जो मीये तीन न द अम त एक ३७९ उगण्या मी ऊपरि अधिक कुवे
गत कल शु विवेक ४ इति गतिकलि चैत्री मा वसि वार नृप मंत्री मेष वार मिथुन रवि सोर धर्मा कर्क म्या धि पसार ५ आमा ठे रोहिलि रिषे जला
धि पति जो वार का ती मां दे मूल दिन कोट बाल सो वार ६ इति राजा मंत्री ज्ञानं ॥ शाका मे दुइ मे लिक रि वारे नागे देइ शेष र हे सो वै नथी वर्षा नाम कह
इ ७ इति वर्षा ज्ञानं ॥ तीन जो मित्रा क काल मे बिजं नागे रहे जेइ शेष र हे सो वै नथी वर्षा नाम कह ७ इति वर्षा नाम आवर्त्त सावर्त्तर पुष्क
र ८ जो ए ४ नाम गिलि मे ८ इति मेद नाम ॥ मेष र विसंक्रम म्ये जे दिन रुषा हि होइ ते धरि सर्व म सुद्र मे गिलि रोहिलि जगि सोइ ९ दुइ दुइ रु
ष म सुद्र मे इक तट ने इक अंधि इक पर्वत इक संघित ट रोहिलि मनि वंध १० इति रोहणी विचार माली धरे म सुद्र मे तट धो बी के धाम संधो वा
ओ बालि क धर गिरि कुंभार स नाम ११ इति म्यागो वा सो र विद्व १० विश्वा वीस २० सनि नो म अ ६० बुध वारा १२ सोल ह गु १५ अछार १० नृ
गु यात्र रत्न निहार १२ कर्कर विजिण वार मे ताथे स मा विचार ॥ शाक अंक त्रिगुण उकरी सा तां देई नाग वध त ६ गुण पण म मित्र विव

रषाएहलान १५ लब्धअंकत्रिगुणकरी साता नागवदेइ वधतडुणपणमजिपुन विश्वाधानलदेइ १५ लब्धलब्धत्रिगुणकरी शर्वरीतिप्र
माण इणशीततेजनेवायुदृष्टि कयविग्रहसवजाणि १५ इतिवर्षाद्यानयनविधिः राशिअधिपसंबतअधिप अंकमेतित्रिगुणाइ पंचनेलिना
गपनर ध्रुवधला नपनणाइ १५ लब्धअंकत्रिगुणकरी जेलिपंचतिथिनाग जोपरदेसापस्वगिति दशाअधोत्ररमाग १५ जापटदवापनरद
१५ मांअडगलुसतर१५ बखशादस१० ह। उगणीसाण राबार१२ शु।इकवीअर रविश्राशि२ कुजत्रबुधधमंदपगुरुइराऊअशुककशुजगीअ २० इ
तिलानपरवाअथपवांगानयनातिथिआरदइकवारमे धम्याअवारदधालि तीनकष्यतेरदधम्या योगइदोइपेताल २ गतसंबत्सरवेत्रवदि
वारसिवारनइत्र ध्रुवकजोड गतपत्रमे करको नवउतिथिपत्र ३२ आरेसअदेव्यारतिथि तिणशीकावइतिथिआर वैत्रशुकलपजिवायकी
वउणिजेगेसुविचार २१ पडिवाशीपांचतिथिफवे बीजधकीवहिदोइ इणपरिवारदमासलगि पइदापतनोदोइ २४ अथपवांगानयन
दितीअधकारः तिथ्यादिकइणाकरी करेयाबलितिथिदीन अगलीतिथिवागदिमव शाथेसुधनदीन २५ पुनः इतीयशकारः तिथिमेदोइ
घडाईये एकदीनकरिवार नइत्रसाइडुइजोगमइ जोडोध्रुवकविचार २५ इणिपारअधोवीसनी थावतिथिवागदि सुधपतडोकरिसंगुदीक
रउमुपुरुसुप्रसाद २७ इतिपवांगानयनविधिः घडीपनरइकत्रीअपल तिथिइणारइकवार शुक्तिकरोगतिअंकमे नवसंकलविचार २६ इतिसं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास	क्रांतिआणलरीविधिते								
३३	३१	२२	२२	३०	३२	३४	२५	३२	३२	३५	३५	१०	दिन	तिथि ११							
३०	३०	२५	३०	३०	३३	३५	३३	३५	३२	३३	३५	२०	दिन								
३१	२२	२५	३०	३१	३३	३५	३५	३५	३५	३३	३४	३०	दिन	वार १							
२०	२०	२०	२०	२०	१५	१५	१५	१५	२०	१५	२०	१०	दिन	५ घडी १५							
२०	२०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	२०	२०	२०	२०	दिन	पनडा							
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	२०	२०	२०	२५	३०	दिन	उदोर ३०							
२१	२३	३३	२०	२१	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१०	दिन								
२१	२२	२२	२२	२०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	२०	दिन								
२१	२३	२२	२१	२०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	२०	३०	दिन								
अ	न	क	र	म	आ	पु	उ	अ	म	र	उ	ह	वि	स्वा	वि	अ	य	श	र	उ	र
३०	१५	३०	४५	३०	१५	४५	३०	१५	३०	३०	४५	३०	१५	४५	३०	१५	३०	४५	३०	१५	३०

अंक
तिथि ४
वार १
घटी १५
नक्षत्र ३
घटी १२
योग २
घटी ४५

॥५॥ अथ गिरलोई विचारः। गिरोली मा घइ पनइतनु धन वंतनइ धनननु कय क
 दइ दलिजनिइ मा घइ पनइतनु धनननु लास कदइ। कष्ट पनी दानइ मा घइ प
 नइतनु कष्ट तनइ। कनु प्रविषमइतनु बुरी। पेटक परिषमइतनु मीठा सोडन
 कदइ। गालन क परिषमइतनु स्त्री ननु लास कदइ। डी मणइ अंग पनइतनु मि
 तननु लास कदइ। दाघनु परिषमइतनु जवो ननु लास कदइ। डी मणइ घव
 इनु परिषमइतनु सोग लास कदइ। नावी जांघ क परिषमइतनु कन्या लास क
 । डी मणी जांघ क परिषमइते मा मंतरनु कदइ। पी नी कृती नीची कतरइत
 नु अथु स्वात करणावइ। नंदि मा विसुता पनइतनु मनो वाचितली सुक
 दइ। इति गिरोली विचारः। काकी मनु मा घइ पनइतनु वमास मादि म
 रण केइ अतिरइ अगि पनइ अथवा अमनु फरस करइतनु यं पुरोगे क
 दइ॥ इति काकी मविचारः॥ अथ। पूर्व दिशि सिरहा एनु करि नइ सुइइत
 नु अथ ऊम क वधइ। वदिगादि सि सिरहा एनु करि सयन तनु सुख संप
 दा क वइ पश्चिमइ घणा विज पकइ। नुतरइष्ट सुमरण दा नि करइ॥ इति

सुगविचारः॥ पूर्वदिशिबीकदवदतनुमरणकद॥१॥ आगितेयकृण्ड
 बीककृवदतनुमोकरदप्रदकिणदिसिनीबंककृवेधनननुनसक
 द॥३॥ निरतिक्कणद्वीकदोइतनुषदोवदध॥ पश्चिमबीकधनना
 समरणसयकद॥५॥ वायव्यकृण्डधनसंपदाननुलासकदकद॥६॥
 उत्तरदिशिनीबीककद॥७॥ इमानेकणइनीबीकसुषलानकद॥८॥
 आपणाबीकचलतानइमरणकद॥९॥ पूर्वनीबीकविणामकद॥१०॥
 आकासनीबीकसर्वसंहारकर॥११॥ पातालनीबीकरागजणाव॥१२॥ इ
 तिबीकविचारनिश्चितं॥ ए० नाथाकेना॥

लमासी तोषु प्रजेः जो ना करी टीसी
 में ई ॥ लवण फुर के तो लक्ष्मी लासः रस गोरस
 कान फुर के तो सूनी वातः दिसो दिस सं लविज
 गाल फुर कई तो स्त्री लो गवि लासः जो अंगु गो न
 रनो फुर के तो वेडि कु प्रजेः जो नीच लो फुर के तो अ
 सत्री लो गल हइः हि रु की यणि लो गलासः गाल फुर
 के तो आनर ल हैः हि रु की न पर रु नी पि ल नी धे
 फुर की ल नी नही गा ब नि फुर के तो लयः बांधो फु
 र के तो क ल ह कु प्रज इ ॥ बनो फुर कई तो वैसी मर इ
 लास लो गज स यामैः काष फुर के तो धन हानि कर इः प स
 बाना फुर के तो बाही वात सुण वः पू वि फुर के तो वैरी
 मरें बाह फुर कई स इ ल मिल इ कु हली फुर के तो जय पां
 म इः हाध फुर के तो क स ट ट लैः हवाली फुर के तो सं प दा
 पां मैः पु ल चै फुर के नी तया म इः अघ वा प्री त व धेः अंगु नी
 फुर के तो प्री त पां मैः ही यो फुर के ब इ री जी य इः ग लो फुर के
 तो लास विग नानः घण फुर के स्त्री लासः पेट फुर के तो सं
 ता ल व ध इः ना सि फुर के तो चालिः आ स ल फुर के तो स्त्री
 सं ॥ ता ल पां मैः डी च ल फुर के तो हरष पां मै ॥ इंद्री फुर के
 तो असत्री लासः क नि फुर के तो न वा व स र यामैः साध ल
 फुर के तो बंध ल पां मैः हवी यार स य कर इः गो मो फुर के
 तो बाह ल याम इः पी नी फुर के तो पर दे स च ला वेंः गिरि ल
 फुर के सं प दा व ध इः प ग नु फुर के तो धन डु वेंः प ग ल नी
 फुर के तो स वि से ष धन याम इः प ग नी अंगु नी फुर के तो
 बाहो य ल मिलैः ल वी अस स य कर इ हि वै पुरुष रा
 अंग जि म लः फुर कई तो विचारः असत्री न इ मा व नु फु
 र के तो विचार जालि बोः जो असत्री सह व डु वै तो उर ल

फलैः विहवनेमभ्रमफलदृशः। जिको विचार कहोति
 कोदीहरोः। अउही जोनु परागे फल रात्रिरो जाणिबोः॥
 इति श्री अंगकुरकण विचार जाणिबोः॥

सात कुलचर्चवेलीनां धोलांः मंत्रगणीनें सतवार कुलें
 मंत्रगणीनें अगनीमां हं हो मवुंः। माचोयगमाचो हाध
 लनें हघावलीनें मसां एनी राषवेलीः बेयैव सतलेगी
 करवीः आदीवारः सघामैगलवा चयमें लेइ सात
 वगणीइः॥ कामरूंदे सकौ मन सानारीः त्यापसे अ
 समाजजोगीः आ समाजजोगी रें वावी बेवामीः॥
 चामी सुके वसुकेः ते कुलकीयां षमी वसे नार
 संगीबीरः यरनरकीनारी मेरे यानुनढालेः
 नुगतो सुरजढालेः हमारी हकारी याबी फरेः
 बाय कामरवा देवी की सकत फरेः॥६

अथो मनवोः जायफः नागके सरवाली २ः॥

लुबीनश्याणी नृधनु धूमीपाणी पाइइ। मीरीश्वजपुरासाणी
 सीधवषवरावीइः पेढदूषतुंरहिं सहिः। अथवागाइनें म

लवंगटांक १
 टंकणवारटां १
 अफीलटां १
 गोलीवाले १

सुविदेवदारु। वज।
 एहनुंचूरुकिहा।
 पांणी सुंकरवीइं स
 मस्तस्वाससमावइ

सारिंगकरा
 समस्तस्वासनें
 वइ।
 सुं

॥ श्री ॥

अथ अंग फरक नीतिषतेः ॥ पहिनी प्रथम मस्तक फुरकै तो न जो वर
रपावै १ विरह मं फुरकै तो राज प्रसाद पावै कपाल फरकै तो दर बधु न
लान होवै २ होय आषु कै विर फुरकै तो रुष मो जाग पावै ३ न
फुरकै तो मित्र नी जावै ४ होउं आषु फुरकै तो अस्त्र समागम होवै ५ कान
रकै तो न जीवात सुनावै ६ नासिका फुरकै तो सुगंध की प्रापता करै ७ ना
फुरकै तो असतरी समागम होवै ८ उपर को होब फुरकै तो असतरी बुमन
करै ९ नीचै को होब फुरकै तो कलेस करै १० मुख आरजी न फुरकै तो मिष्ट
न नो जन पावै ११ पित्त फरकै तो न जो वसतर पहरे १२ कषु फुरकै तो मरन क
लेस देवै १३ दोइ धंधी फरकै तो मजन मिलै १४ बांह फुरकै तो नाइ हित सुने
होवै १५ हाथ हथेरी फरकै तो सुदर बदेवै १६ हिर हो फुरकै तो ब्रह्म न गतिक
१७ उदर फुरकै तो द्वा नो जन विडै १८ रंजी फुरकै तो असतरी सुनो गरी
ताप करै १९ होइ जंघ फुरकै तो अस्त्र अरघो डी प्रसीध पावै २० बिनी फुरकै
तो न सुष करावै २१ पाव कै तरब फुरकै तो धंध मार गच जावै २२ इती
कन की धी छास पुंछी

जामणु २४

इत न राज रमान कदइ निलाउ फुरकइत उं नान वृद्धि नाक
इ फुरकइत उं प्रीय संगम कदइ बिऊ आं पि विचाल इ फुरकइत उं
ना ना करी मां ही फुरकइत उं संतोष ऊप जइ ना करी दिग मी फुरकइत
तउ जस लाल लवणा फुरकइ धन लाल कइ को न फुरकइत उं ही बात संन लावइ ना वउ को न फ
रकइत उं आइ कारण वात संन लावइ अंध म्नी मुं कल होइ जीमण उं गाल फुरकइत उं श्री
लाता ना वउ गाल फुरकइत उं श्री ना पद दिसा अ श्री मिलइ ५ घवा श्री पदा दिष्ट नो न
प्राप्ति ऊपरिल उदो व फुरकइत उं विजय होविल उं होव फुरकइत उं प्रीय संगम कदइ अंध
तो न कदइ हिम की फुरकइत उं नो गती प्राप्ति हिम की फुरकइत उं मध्य म्भ फला अंध वाक
वाइ एक नउ ते नउ आबइ गल उं फुरकइ आरण प्राप्ति ऊइ जीमण उं वउ फुरकइत उं
नो ग प्राप्ति ना वउ वउ फुरकइत उं ना कंध फुरकइत उं कल हा काष फुरकइत उं
इव्य हा निप सवा ना फुरकइ वधे न नी वात संन लावइ अंधि फुरकइत उं वयरी मरइ
जीमणी वाऊ फुरकइत उं प्रिय मेला पक होइ नावी बांर फुरकइत उं श्री पदा दनी
इतुं कष्टुं कष्टुं कष्टुं कलियइ जीमण उं हा व फुरकइत उं जया ना वउ हा व फुरकइत उं
रोगा म्पतिक कदइ रुघाली फुरकइत उं धन लाल प्रउ रुचउ फुरकइत उं अनी ध्वी त
इ आं तुली फुरकइत उं अलग्ना रुती मित्र बंधु आपण उं अंध आरइ ना वउ वउ उ
वउ फुरकइत उं का एक म्नी वरिवां वइ नावी रुघाली फुरकइत उं वइ शो वा वधिकरइ
ना वा हा वरी आं तुली फुरकइत उं वयरी धरिष की वा ही वा वधिकरइ वद फुरकइत उं वयरी
जया ही म्भ उं फुरकइत उं निषण फुरकइत उं वउ त ला ना पेद फुरकइत उं नार वृद्धि ना लि
फुरकइत उं नान व शं तु व फुरकइत उं श्री ला ना क कि फुरकइत उं क म्भ ला ना प्रशि म्भ देवा फुर
कइत उं मुत प्राप्ति ना वल फुरकइत उं बंधन अ म्नी कल हा गो ना फुरकइत उं वा हा ला ना जां घ फुरक

[Faint, mostly illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines.]

उपरि
 पेषकरुश। गिरीयाकुः उचउएदव्यावइ। पगकु० उधानलात। पगतलीकु० उमला
 तगामंतरउकरुइ। आउलीकु० उजाई अनीहमूआनीवातआवइ। पुरषनइजि
 मणउअंग। स्त्रीनइमावइ। अंगि। प्रधवस्त्रीनइसीधुफल। विधवानइअधुफे
 ल। जायारिहितपुरषनइमोउउफल। धवाऽधुफल। जायारिहितनइसीधु
 अरुणफल। दिनेयधोक्तफल। रात्रिविपरीत। वलचरियतीवालकमाशां
 राजाहीनोपुणाधिकानीयधोक्ता। दधिकयाअफल॥ इति अंगकुरणविना
 रा। लिपी कर्त सर्व अंग उद्यत्य॥ श्री॥

१	२	६
४	७	५
६	९	३

Handwritten text in Gurmukhi script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines across the page. Due to the age and fading of the document, the specific content of the text is largely illegible. The script appears to be a form of Punjabi or Sikh religious text.

बनरनार वस्त्रान्नरलनहे तिणवार गावफरुके नयमरलथाय हाषवीयोफलमास्त्रमाह ११ कंक्षेकल
 हफरकैतेऊवै ला ननोगजसुफरकेषवै काषफरुकीऊवेधनहांणि वातकहीएहवीपुरांण १२ पसवा
 माफरकेजसुसोमे वस्त्रनवातसुणावेतिमेः पुवफरुकेवैरीमरैः कारजसवैघरवेतांहीसर १३ बांहफ
 रुके प्रियनोमेलः ऊहणीफुरकीजयपदहेलेः करफूरकेठालेआपदाः फूलीहथाजीरायेसंपदाः १४ पुण
 वैफूरकैनवितारैमित्र अथवाकिंपिवधारैधीतः आंगुलीयांपुणएहविवारः धारोअरथएहनिरक्षरः १५ हि
 येफरुकेला नप्रमाणः थणफूरकेसविसेषतजाणः पाटफूरकेवधेनंनारः नानफूरकीपायविहारः १६ गु
 जफरकीरमणीरंगः पामेनिश्चैउत्तमसंगः कठफूरकीपहरीजेवस्त्रः सायलफूरकीबंधणसस्त्रः १७ गोम
 फूरकेबांहणवटैः जंघाफूरकीपंथेपमैः गिरयेफूरकेसंपदवधे अथकाईअविंतितामिलैः १८ पगऊप
 रफूरकैधनहोयः पगतलिएसविशेषउजोईः पगनीआंगुलीयाजिसेफूरैः तबअनीछघरआवेतिसेः १९
 उरषअंगलीजेजीप्रणैः बांमअंगफलनारीगिलोः उरतफलसूहवसुजागः मशिमफलआयोविह्वने २०
 ठवमनबोफलबोल्कोकेमेः बलविपरीतकह्योनिअममे दृष्ट्यवारनेवालऊमारः राजप्रमुषफलपति
 *नेदर आरः २१ अंवतनुवनरअवंदः अदमशहेदिनहेमानः कहीवाततनफूरकणतणीः आगवांणजिआंगुणन
 णीः २२ इतिश्रीआंषफूरकणरोविवारअंयूणी॥

सुकनविवा ॥ पहरी उठी कन्यका माझी आयमिलंत निषमी माथे आव्ही पावी कोण करंत २२ वा जो अषरो वाजतो सोमो ७
 यमिलंति सुकन विवारो पंथीया तिण घर दोल घूरंति ३ मी गो फलसोमो आवतो वारी जीज सोई अकन विवा
 रो पंथिया दिन दोलत होय २४ पुफ गुंथी अ नमालका साझी जो आवंत अकन विवारो पंथीया सोतर राज करंत
 २५ निरक्षुम कै पाव कसा मुही कवही जो आवंत अकन विवारो पंथिया तेज पूंज दीपंति २६ वृष न जंही आं
 मुही कवही माझी होय अकन विवारो पंथीया राज करे श्री सोई २७ मिंघा अण अत सो नतो सोमो जो आ
 वंत सुकन विवारो पंथीया पग २ जीज कै रंति २८ सुहर मंमत हाथीयो आमो जो मिलंत सुकन विवारो पं
 थिया दिन २ अत दीपंति २९ इति श्री सुकन विवार मंथूणी ॥ ॥ अथ आषफूर कन विवार लिखते श्रीहरष
 फुरपय वंद जो फकर अऊ बोयई वंद नर नारी ना अंग पंग फर कै तास फलापत वंग २ माथे फुर कै पुह वीराज
 पंगी अविबल सारै काज नाल फुर कै पुह साजण रुद्ध दिन २ थाये रुद्ध मंथू २ नां पिल फुर की सुष संप जै थां
 नक बैठा पाये विजै नाक आष विविस्तर के जेह प्रीय अंग म अष म हू ३ वे अव म नेह ३ विजं आषा विविस्
 र कै जाम मित्र मिले अण विं सो तां म मय लोक हं हिब ए जू जू उ वेदोग मनो जेइ हू उ ४ जिमलि आषा उपर
 फिरे तो जम जा न अष अनुअरे हान अने नय नीवले फुर की आषे कं लह महियले ५ सुष नोग अंग मं
 वियो ॥ नीवली फुर की फल ना वीये अं जहरी रुंय नय डष पाय इले नेत्र क ह्या विग ताई ६ नाक तणी मं
 मी जव फुरे आत मं तो पी सुष करे टिका श्री फुरे जव नाम का दीये नव जअनी आष का ७ लवणा फुर कै ल
 षमी लाव पाये रु धर ही घी छाव का न फुर कै सुबचन मुणे रु नी वात ही सो दि म नणे ८ गाल फुर कै महला
 नोग अथ नो जन माअर जोग होव फरु कै जव ऊ परे तव अचित क निय लनर करै ९ सुष मिष्टान फ
 रु कै लहे स्त्री संग म अधरै गह गह नोग जही जे हिम की फुरे होव फरु कै बोली बुरा १० गली फरु कै ज

